Vol II Issue II Dec 2012I ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Osmar Siena
Brazil

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol.2, Issue.3, Dec. 2012
ISSN:-2249-894X

Available online at www.reviewofresearch.net

ORIGINAL ARTICLE

निस्सीम होते शब्द : पृष्ठ भूमि

लक्ष्मी

प्रस्तावना :–

'निस्सीम होते शब्द' कवि रमेशचन्द्र शर्मा की अत्यन्त ही प्रौढ रचना है। जिसमें कवि की संवेदना, देशभक्ति, कर्तव्यपरायणता, प्रकृति–प्रेम, महान् साहित्यकारों के प्रति श्रद्धा–भाव, व्यंग्यात्मकता, चिन्तन प्रदान दृष्टिकोण, आधुनिकता तथा भाषा–प्रगाढ़ता स्पष्ट झलकती है। रमेशचन्द्र शर्मा उन विरले साहित्यकारों में से एक है जिन्होंने अपनी पहली कृति से ही साहित्य–जगत में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। कवि की बहुमुखी प्रतिभा का अन्दाजा इससे ही लगाया जा सकता है कि वाणिज्य के प्राध्यापक होने के बावजूद हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अपनी पहचान बनायी।

श्री निवास शर्मा शास्त्री की पंक्तियों से उनके व्यक्तित्व की पूर्णता को आंका जा सकता है–

काव्य गगन में उदित हुआ, यह बाल रवि है,
कवि रमेश तो वयोवृद्ध हैं पर कविता में बाल कवि है।
काव्य व्योम की प्रथम किरण की देखो कितनी लाल छवि है,
काव्य–यज्ञ में कवि रमेश की सुगन्धमयी यह प्रथम छवि है।।

कवि रमेशचन्द्र शर्मा का जन्म 22 मार्च 1943 को रेवाड़ी जिले के तिहाड़ा गांव में हुआ। वे मध्यम वर्गीय संयुक्त परिवार में रहते थे उनके पिता जी एक चीनी मिल में कार्य करते थे अंतः उनकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में हुई। इसी कारण उन्होनें गांव की सभ्यता–संस्कृति, मानवीय संवेदना का वर्णन इतनी सूक्ष्मता से किया है। कवि नारी ह्रदय के भी परखी लगते हैं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव देखे थे, जिसकी स्पष्ट झलक इस काव्य में मिलती है। 21 अक्तुबर 1969 को वाणिज्य प्राध्यापक रूप में कार्यरत हुए। लगभग 32 वर्ष के सेवाकाल के बाद मार्च 2001 में सेवानिवृत हुए। वे विभागाध्यक्ष एंव कार्यकारी प्राचार्य के रूप में भी नियुक्त किये गए। 2004–2007 तक वे अखिल भारतीय परिषद् हरियाणा प्रान्त के महामंत्री रहे।

प्रो. शर्मा जी बेहद हंसमुख प्रवृत्ति के हैं। वो अपनी साफ़गोई के लिए भी विख्यात है। समाज के प्रति उनकी निष्ठा एंव सच्ची कर्त्तव्यपरायणता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने सपत्नी नेत्रदान का संकल्प लिया है। समाज के प्रति उनकी यही सच्ची निष्ठा उनके काव्य में साफ झलकती है शायद इसी कारण वे समाज की संवेदनहीनता को इतनी सूक्ष्मता से इंगित किया है–

जिन्दगी जाने छूपी किन राशियों के बीच,
छप रही है रोज़ काले हाशियों के बीच,
रोज़ करते खुदकुशी सपने कई बेज़ार।

कवि शर्मा रेवाड़ी की साहित्यिक गतिविधियों के पर्याय हैं, बात चाहे अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, रेवाड़ी के दो दिवसीय प्रांतीय अधिवेशन की हो या फिर 'हंस काव्य संध्या' की, महाभारत तथा रामायण ज्ञान प्रतियोगिता के आयोजन की हो या विभिन्न अवसरों पर काव्य गोष्ठियों के सफल आयोजन की, श्री शर्मा जी का साहित्य–सेवा मिज़ाज सदैव आगे बढ़कर कार्यक्रमों को गरिमा प्रदान कर सफल करवाता रहा है।

आकाशवाणी रोहतक तथा दिल्ली से अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों, काव्यपाठों तथा परिचर्चाओं में वे साहित्यिक परिदृश्य के प्रभावी टिप्पणीकार के रूप में जाने जाते रहे हैं, अब भी वे कई सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से सक्रिय हैं। कई संस्थाओं एवं पत्रिकाओं के आजीवन सदस्य भी हैं। वर्ष 2001 में रेवाड़ी परिषद् के प्रांतीय अधिवेशन का भी उन्होंने सफल आयोजन किया है। श्री रामेश्वर दयाल शर्मा की 'हरियाणवी रामायण' के प्रकाशन एवं पाठालोचन में भी उनका सहयोग रहा। उनके साहित्यिक योगदान को इन शब्दों में स्पष्ट तौर से समझा जा सकता है– ''क्षेत्र के सभी रचनाकारों को साथ लेकर आप साहित्यिक गतिविधियों का जिस कुशलता एवं सफलता के साथ आयोजन निरन्तर कर रहे हैं, वह प्रशंसनीय है''।

साहित्य पृष्ठभूमि और कृतित्वः–

कविता के प्रति उनका आकर्षण संभवतः जन्मजात था जो उत्तरोतर पुष्ट होता गया है। घर में श्रदेव चाचा वैध खूबराम शर्मा शास्त्री

.

आयुर्वेदाचार्य तथा पूज्य अग्रज मदनमोहन जी का जुटाया विपुल साहित्य–संग्रह उनके बड़े काम का रहा। स्वरूचि–अनुरूप उन्होंने इसका भरपूर लाभ उठाया। इस संग्रह से न केवल ज्ञानावर्द्धन ही हुआ वरन् उनकी रूचि को भी सही दिशा मिल गयी। बचपन में पढ़े इस सत्य साहित्य के प्रभाव से बाद में उन्होंने मित्रों से, पुस्तकालयों से अथवा सड़क पर पसरे अपसाहित्य में से केवल अपने काम की पुस्तकों का ही चुनाव किया।

बचपन में ही भाई मदनमोहन जी के सौजन्य से उन्हे गीता प्रेस गोरखपुर, गीता–रामायण समिति रामपुर (उ0प्र0) व राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा जैसी संस्थाओं द्वारा आयोजित कई परीक्षाओं में बैठने का सुअवसर मिला। इस कारण हिन्दी भाषा व साहित्य के प्रति उनका अनुराग और अधिक पुष्ट हुआ। अपने तीस–बत्तीस वर्ष के लम्बे शिक्षणकाल में अपने छात्रों की साहित्यिक संस्थाओं के क्रिया–कलापों में भी उन्होंने विभिन्न रूपों से भागीदारी की है। अनेक स्थानों पर अनेक मंचो से, अनेकानेक साहित्यिक दिग्गजों के सान्निध्य में अनेक बार सुनने–सुनाने का अवसर मिला है जिससे उनके स्वभावतः संकोची मन को सहज सामान्य होने में बड़ी मदद मिली।

कविता लिखते समय उन्होंने कभी मेज़–कुर्सी की जरूरत अनुभव नहीं की और न ही कूलर या एयरकण्डीशनर की। जब कभी कोई विचार उतरा या पंक्ति कौंधी–रेल में, बस में या पैदल चलते, तख़्त पर बैठे या लेटे, दिन को अथवा रात को अचानक आँख खुल जाने पर, उसे तत्क्षण ही कागज के टुकड़े पर नोट कर लिया। ''ऐसे स्फुट विचार मेरे काव्यकोश के अमर अंश बनते रहे हैं। मैनें किसी शब्द को अवतरित होने के बाद कभी करते नहीं देखा''।

उनके छात्रकाल में हिन्दी अथवा संस्कृत की कोई पाठ्यपुस्तक ऐसी नहीं थी जिसकी सभी कविताएँ अथवा श्लोक उन्हें कण्ठस्थ न हो। यद्यपि वो वाणिज्य के छात्र थे तथापि कॉलेज पुस्तकालय से प्रसिद्ध काव्यकृतियाँ लेकर पढ़ना उनका शौक था। उन दिनों मैथिलीशरण गुप्त उनके प्रिय कवि थे। सहज–सरल भाषा में कही उनकी सीधी–सच्ची बातें उन्हें बहुत अच्छी लगती थी। आधुनिक कविताएँ उन्हें आकृष्ट नहीं करती थी। तुलसी, सूर, मीरा, कबीर, रहीम, रसखान जैसे भक्तकवि उनके हृदय के अति निकट थे। जिसका प्रभाव उनकी साहित्य पर स्पष्ट दिखाई देता हैः–

माधो, कठिन कसौटी उधो।
बार–बार सूधो करि राख्यो, पलट भयो पुनि मूधो।।
उत्कट विकट काठमति ऐसो, रस को घोर बिरूधो।
प्रेमी परम थार मरूथल को, अगम पंथ को जूधो।।

तुलसीकृत 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' ने तो उनकी रचनाधर्मिता को एक सार्वकालिक कसौटी दी है। उनके पारिवारिक परिवेश में संस्कृत, व्याकरण, और 'रामचरितमानस' के प्रति रूझान का प्रभाव भी उनके बालमन को संस्कारित करता रहा। इसी कारण तुलसी को महान् कवि मानते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धा को वाणी दी।

डॉ. नंदलाल मेहता 'वागीश' ने भी शर्मा जी को कई बार तुकाश्रित जोड़ मिलाते और मन ही मन दोहराते हुए कागज़ के छोटे–छोटे पुर्जों पर उतारते देखा। उन्होंने (वागीश जी) ने अयाचित परामर्श देते हुए कहा कि लयबद्ध शब्द अनुगूंज के सहारे ही अपनी सम्पूर्ण लय का स्वयं विस्तार कर लेते हैं। इसलिए उन्हें आप बाकायदा किसी कापी में नोट कर लिया करें। ''................मैं उनके अन्तस् में उठते भावों, विचारों, कल्पनाओं, शब्दों और लय–संस्कृतियों का प्रथम साक्षी बना। मेरा संक्षिप्त कब उनकी आवश्यकता में ढ़ल गया, यह पता नहीं चला।''

काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा कवि को प्रिय रही है। इस कारण काव्य–रचना के प्रारम्भिक चरण में कविताएँ ऐसी भाषा में लिखी गई जिसे कवि ने 'ब्रजीलीभाषा' नाम दिया अर्थात् ऐसी भाषा जो शुद्ध ब्रजभाशा न होकर ब्रजभाषा से प्रभावित है। उनकी रचना का माध्यम संभवतः यही भाषा बनी रहती, पर डॉ. हरिशचन्द्र के परामर्श से उन्होंने खड़ी बोली को अपना लिया। कारण?ब्रजभाषा में अब न कोई लिखता है और न कोई आसानी से इसे समझ ही पाता है।

डॉ. हरिशचन्द्र वर्मा उनके दिशा–स्तम्भ रहे हैं। प्रत्येक सम्पर्क में उन्होंने आंग्रहपूर्वक उनकी रचनाएँ सुन–पढ़कर न केवल प्रेरित किया वरन् अनेक बहुमूल्य दिशा–निर्देश भी दिये हैं। ''ब्रजभाषा के व्यामोह से निकलकर 'खड़ी' में कविता करवा लेना उन्हीं के चुम्बकीय प्रभाव का परिणाम है।''

डॉ. नंदलाल मेहता 'वागीश' का भी उन्हें काफी सहयोग मिला। 1969 से लेकर अब तक की उनकी अभिव्यक्ति के प्रत्येक शब्द के कोर किनारे कॉंट–छॉंटकर वे ही उसे कविता के लायक बनाते रहे हैं। उन्होंने ही कवि को उनकी कृति 'निस्सीम होते शब्द' अकादमी को प्रेशित करने के लिए बाध्य किया।

कवि की पहली कविता 1966 में प्रकाशित हुई। इसके बाद से वो लेखन के प्रति गंभीर हो गये और फिर लेखन का सिससिला चल पड़ा। पत्र–पत्रिकाओं में रचना प्रकाशन के साथ–साथ आकाशवाणी रोहतक एवं दिल्ली से इनकी वार्ताएँ आदि प्रसारित होती रही हैं। कविता तथा गज़ल कवि की प्रमुख लेखन विधाएँ हैं। 24 जुलाई 2000 को अखिल भारतीय साहित्य परिशद्, रेवाड़ी शाखा की ओर से आयोजित कार्यक्रम में कवि के पहले काव्य संग्रह का 'निस्सीम होते शब्द' का लोकार्पण डॉ. शिव कुमार खंडेलवाल ने किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में वाणिज्य के व्यक्ति के लिए ऐसी काव्य विलक्षणता को विस्मित कर देने वाला बतलाया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष आचार्य निशान्तकेतु व मंच संयोजन प्रान्तीय महामंत्री डॉ. नन्दलाल मेहता ने किया।

डॉ. कृष्णचन्द्र गोस्वामी ने कवि की रचनाओं को साहित्य जगत् की उपलब्धि बतलाते हुए कहा कि उनकी 'भाव–समाधि' रचना अकेली ही उन्हें उत्कृष्ट कवियों की श्रेणी में ला खड़ा करती है। परिशद् के पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा ने इनकी रचना 'विजयपर्व' के आधार पर उन्हें प्रबन्ध काव्य लिखने का परामर्श दिया।

विभिन्न विद्वानों के विचारः–

यह काव्य–संग्रह कवि की पहली काव्यकृति होने के बावजूद अत्यन्त प्रौढ़ और सशक्त रचना है। इसकी प्रौढ़ता एवं प्रांजलता को विभिन्न विद्वानों के अपने विचारों से भी जाना जा सकता है, जिनका वर्णन निम्न हैः–

निस्संदेह अद्भूत प्रतिभा है आपके लेखन में। भाषा का संयम छन्द की सिद्धि और विभिन्न विधाओं में एक साथ साधिकार लिखकर आपने अपने चमत्कार से विमुग्ध किया है।........ इसकी रचनाएँ एक से बढ़कर एक है।

उनके एक ही काव्य–संग्रह में मुझे एक साथ रसखान का रस, तुलसी की नीति–भक्ति, निराला का मुक्त छन्द और लयात्मकता, मैथिलीशरण की सहज–सरल अभिव्यक्ति तथा उर्दू शायरी की रवानगी मिल जायेगी–यह कल्पना मैंने कल्पना में भी नहीं की थी।

आपको सच बताऊँ, आपकी भाषा की प्राजंलता, शब्द–शुद्वता तथा काव्य का प्रवाह देखकर आप से ईर्श्या होने लगी है।

'निस्सीम होते शब्द' काव्य रचना पढ़कर ऐसा अनुभव हुआ मानो कवि के काव्य भवन के सुमण्डित प्रांगण में 'सोलह श्रृंगार' किए हुए नवोढ़ा शोड्शी अपने प्रियतम से कहती है कि मुझ जैसी पाओगे कही और पल–पल नए परिधान बदलती कविता कामिनी का रसिक रसिया वाह–वाह

कह उठा:—
''किं कवेस्तेन काव्येन् कि
परस्य हृदयेलग्नं न धूर्णयति यंच्छिर।''

वह कवि की कविता क्या और धनुर्धारी का बाण क्या जो दूसरे के हृदय में जाकर लगे और उसका सिर न घूम जाए।

छंदों, अलंकारों एव भावों का सुन्दर एवं स्वाभाविक संगम, इन दिनों की बेलगाम रचनाओं में कहीं भी नहीं दिख पाता। ऐसा लगा कि बहुत दिनों बाद एक शुद्ध रचना का आन्नद प्राप्त हुआ है।

यह काव्य—संग्रह एक अत्यन्त सुन्दर, प्रौढ़ एवं सशक्त रचना है जो कवि के जीवन—सघंर्ष, जीवनानुभव एवं उनके संवेदनशील ह्रदय की अभिव्यक्ति है जो उनकी समाज के प्रति कर्तव्यनिश्ठा से रिस—रिस कर लय एवं छन्दों में ढली है। कवि के पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व को निम्न पंक्तियों में समझा जा सकता है:—

भावों भरा ह्रदय था कवि का,
राष्ट्र—प्रीति से रंजित।
प्रखर लेख़नी से प्रसूत था,
शब्द—शब्द उर्जस्वित।

आधार ग्रंन्थ:—

निस्सीम होते शब्द।

---

[1]शोध छात्रा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
[2]श्री निवास शर्मा से प्राप्त पत्र की प्रति से।
[3]राज्यकवि उदयभानु हंस द्वारा लिखित पत्र से प्राप्त।
[4]'निस्सीम होते शब्द', पृ. (xviii).
[5]'निस्सीम होते शब्द', पृ. (xix)
[6]डॉ. योगेन्द्र गोस्वामी (सम्पादक), 'साहित्य परिक्रमा' के पत्र की प्रतिलिपि।
[7]श्री चन्द्रभानु आर्य, 'न्यामती' (मासिक), फरीदाबाद (जून 2003)।
[8]श्री अमृतलाल मदान के पत्र की प्रतिलिपि।
[9]श्री निवास शर्मा शास्त्री के पत्र की प्रतिलिपि।
[10]श्री निर्मल झंकार के पत्र की प्रतिलिपि।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net